~~24~~ 29-1-67 मनमनाभव ओम शान्ती मदयाजी भव 24 प्रातः क्लास

शिवभगवानोवाच्य, भगवान ने ही समझाया है कि कोई मनुष्य को ~~समझकर~~ भगवान कह नही सकते। भगवानो वाच्य मनुष्य को भगवान नही कहा जा सकता। देवताओं को भी भगवान नही कहा जा सकता। भगवान तो निराकार है। उनका कोई भी साकारी वा आकारी रूप नही है। सुक्ष्म वतन वासियों को सुक्ष्म आकार है। इस लिये उसको कहा जाता है सुक्ष्म वतन। यहां साकारी मनुष्य तन है इसलिये इसको स्थूल वतन कहा जाता है। सुक्ष्म वतन में यह स्थूल पांच तत्वों का शरीर होता नही। यह पांच तत्वों का मनुष्य शरीर बना हुआ है। इसको कहते है माटी का पुतला। सुक्ष्मवतन वासियों को माटी का पुतला नही कहेंगें। देवता धर्म वाले भी है मनुष्य। परन्तु उनको कहेंगे दैवी गुणों वाले मनुष्य। वह दैवी गुण प्राप्त किये है शिव बाबा से। दैवी गुण वाले मनुष्यों में और आसुरी गुण वाले मनुष्यों में कितना फर्क है। मनुष्य ही शिवाल्य में रहने लायक मनुष्य ही वैशाल्य में रहने लायक बनते है। वैशाल्य भी वह भारत बनता है। सतयुग को कहा जाता है शिवाल्य। शिवाल्य भी यही भारत बनता है वैशाल्य भी यही भारत बनता है। सतयुग भी यहा ही होता है। कोई मूल वतन वा सुक्ष्म वतन में नही होता है। तुम बच्चे जानते हो वो शिव बाबा का स्थापन किया हुआ है। कब स्थापन किया? संगम युग में। यह दुनिया है पतित तमोप्रधान। इसको सतोप्रधान नई दुनिया नही कहेंगे। नई दुनिया को सतोप्रधान कहा जाता है। वो ही फिर जब पुरानी बनती है तो उसको तमोपधान कहा जाता है। तमोप्रधान दुनिया ही फिर सतोप्रधान बनती है कैसे? तुम बच्चों के योग बल से। योग बल से ही तुम विकर्म विनाश करते हो। और पवित्र बन जाते हो। पवित्र लिये जरूर फिर पवित्र दुनिया चाहिये। नई दुनिया को पवित्र पुरानी दुनिया को अपवित्र कहा जाता है। पवित्र दुनिया को बाप स्थापन करते है। यह बातें कोई मनुष्य नही जानते है। यह पांच विकार ही नां हो तो मनुष्य दुखी होकर बाप को याद क्यों करे। बापकहते है मै हूं ही दुख हरता सुख करता। दुख करता रावण है। 5 विकारों का पुतला बना दिया है 10 शीसों का। इस रावण को दुश्मन समझ कर जलाते है। सो भी ऐसे नही दवापुर आद से ही नही जब बहुत तमोप्रधान बनते है तब कोई मतमतान्तर वाले बैठ यह नई बाते निकालते है। जब कोई बहुत दुख देते है तो उनका ऐफेजी बनाते है। तो यहां भी मनुष्यों को जब बहुत दुख मिलता है तो ~~उनका~~ ~~ऐफेजी~~ यह रावण बनाते है। तुम बच्चों को पौना सुख, चौथाई हिस्सा दुख मिलता है। अगर आधा सुख आधा ही दुखः हो तो मजा ही क्या रहे? बाप कहते है तुम्हारा यह देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है। सृष्टी तो अनादी बनी हुई है। यह कोई पूछनही सकते कि सृष्टी क्यों बनी? कब बनी? फिर कब पूरी होगी। यह चक्र फिरता ही रहता है। शास्त्रो में कल्प की आयू लाखों वर्ष लिख दी है। तो जरूर संगम युग भी होगा जब सृष्टी बदलेगी। अब जैसे कि तुम फीलकरते हो ऐसे और कोई समझते नही। इतना भी नही समझते कि राधा कृष्ण बचपन में है फिर शादी होती है। दिखाते भी है बगीचे में मिलते थे... यह नही जानते कि दोनो अलग-2 राजधानी के है। फिर इनका स्वयंवर होता है तो लन्न. बनते है। यह सब बाते बाप ही बैठ समझाते है बाप ही ज्ञान का सागर है। नालेज फुल है। ऐसे तो नही कि वो जानीजाननहार है। सबके दिलों को जानने वाले है, यां तो कहते है सबमें ही वो व्यापक है। अब तुम बच्चे समझते हो बाप तो आकर नालेज देते है। नालेज पाठशाला में मिलती है। पाठशाला में ऐम आब्जेक्ट तो जरूर हो ना चाहिये। अब तुम पढ़ रहे हो। छीछी दुनिया में राज्य नही कर सकते। राजयोग कोई सतयुगमें थोड़ेई सिखावेंगें। संगम युग पर ही बाबा सिखाते है। यह बेहद की बात है। बाप कब आते है तब क्या होता है यह कोई को भी पता नही है। घोर अन्धेरा है नां। ज्ञान सुर्य नाम से जपान में वो अपने को सुर्यवंशी कहलाते है। वास्तव में सुर्यवंशी तो दैवी देवतायें ठहरे। सुर्यवंशियों का राज्य सतयुग में होता है। गाया भी जाता है ज्ञान सुर्य प्रगटया तो भक्ति मार्ग का अन्धेरा विनाश। नई दुनिया सो फिर पुरानी पुरानी दुनिया ही सो फिर नई बनती है। यह बेहद का बड़ा घर है। कितना बड़ा माण्डुवा है। सुर्य चांद सितारे कितना काम देते है।

रात्री को बहुत कामचलते है। ऐसे भी कई राजायें लोग है जो दिन को सो जाते रात्री को सभाये आद लगाते है। खरीदारी करते है। अभी तक भी कहीं-2 चलता है। मिस्र आद में भी रात को कामचलता है। अब तुम बच्चे जानते हो यह है हद के दिन और रात। वो है बेहद की बात। यह बाते तुम्हारे सिवाय और कोई की बुद्धी में नही आती। शिव बाबा को भी जानते नही। अपने को ही शिवोअहम कह पूजा करते है। इनको कहेंगे पाँच भूतों की पूजा। बाप हर बात समझाते रहते है। ब्रह्मा के लिये भी समझाया है। प्रजापिता ब्रह्मा है। बाप जब सृष्टी रचते है तो जरूर किसीमें प्रवेश करेंगें। पावन मनुष्य तो होते ही सतयुग में है। कलियुग अन्त में तो पतित भ्रष्टाचारी मनुष्य होहोंगें। भ्रष्टाचारी अर्थात जो विख मूत सें पैदा होते है। मनुष्य कहेंगें भला मूत बिना सृष्टी कैसे चलेगी। अरे देवताओं को कहते होहो सम्पूर्ण निरविकारी। कितनी सुदता सें इनके मन्दिर बनाते है। ब्राह्मणों बिना कोई मूर्तियों को छूं नां सकें। हां कोई पैसे देते है तो अलाऊ की देते है। आजकल ठगी तो हर जगह है ही। समझो किसी मन्दिर में राजा आते है अब है तो वो भी विकारी। परन्तु उनको मनाह कोई कर विकारी दुनिया में तो सभी विकारी है। वास्तव में इन देवताओं को विकारी कोई टच नां कर सके। परन्तु आजकल पैसों सें सब कुछ होता है। कोई घर में मन्दिर आद रखते है तो ब्राह्मणों को जरूर बुलाते है। अब विकारी तो वो ब्राह्मणभी है। सिर्फ नाम ब्राह्मण है। यह तो दूनिया ही विकारी है तो प्रजा भी विकारियों सें ही होतीहै। निरविकारी कहां सें आवे? निरविकारी होते ही है सतयुग में। ऐसे नही कि जो विकार में नही जाते उनको निरविकारी कहेंगें नही। शरीर तो फिर भी विकार सें पैदा हुआ है नां। बाप नें एक ही बात बताई कि रावण राज्य है। राम राज्य है निरविकारी। सतयुगमें पवित्रता थी तो पीस प्रासपैरिटी भी थी। तुम दिखा सकते हो सतयुग में तो इन ल.न. का राज्य था नां। वहां पांच विकार होते ही नही। है ही पवित्र राज्य। भगवान स्थापन करते है। सतयुग में भी अपवित्र अगर होते तो पुकारते नां। वहां तो कोई पुकारते ही नही। सुख में कब यादनही करते। परमात्मा की महिमा भी करते है सुख का सागर पवित्रता का सागर है। मांगते भी है कि शान्ती हो। अब सारी दुनिया में सुलाह ~~करते है~~ मनुष्य कैसे करेंगें। सुलाह का राज्य तो एक ही था। जब कोई आपस में लड़ते है तो सुलाह कराना होता है। वहां तो है ही एक राज्य। बाप कहते है इस पुरानी दुनियां को ही अब खत्म होना है। इस महाभारत लड़ाई में सबका विनाश होना है। विनाश काले विप्रीत बुद्धी अक्ष भी लगा हुआ है। बाकी पाण्डव तो तुम हो नां। तुम हो रूहानी पण्डे। सबको मुक्ति धाम का रास्ता बताते हो। वो है आत्माओं का घर। अब बाप कहते है इस दुख धामको देखते हुए भी भूल जाओं। बस अब तो हमको शान्ती धाम में जाना है। यह आत्मा कहती है। आत्मा नें रियेलाईज़ किया है। आत्मा को याद आया है कि मैं आत्मा ऐसी हूं। बाप भी कहते है मै जो हूं जैसा हूं तुमको समझाया है, मै बिन्दी हूं ऐसे और कोई समझा नां सके। मुझे 84 जन्मों का पार्ट बजाना है। यह घड़ी-2 बुद्धी में रहना चाहिये हमने 84जन्मों का पार्ट कैसे बजाया है। इसमें बाप भी याद आवेंगें। घर भी याद आवेगा। चक्र भी याद आवेगा। इस दुनिया की हिस्ट्री जाग्राफी को तुम ही जानते हो। कितने खण्ड है। इन खण्डों की आपस में कितनी लड़ाईयां आद लगी है। सतयुग में लड़ाई आद की बात ही नही। यह है बिलकुल ही नई बाते। वो तो कह देते कल्प लाखों वर्षों का है। तो मनुष्य अन्धेरे में है नां। रात-दिन का पैला पढ़ गया है। रात माना अन्धेरा, दिन माना सोजरा। तो बहुत फर्क है नां. हर बातों में कहते है रात-दिन का फर्क है। यह है बेहद के रात और दिन। इनमें भी कितना फर्क है। कहां तो राम राज्य कहां रावण राज्य। वो है ईश्वरिय राज्य। यह है रावण का आसुरी राज्य। बाप कहते है अबतुम जैसे कि ईश्वरिय राज्य में हो। ईश्वर यहां आया है राज्य स्थापन करने। ईश्वर तो राज्य करते नही। खुद राजाई नही लेते है। निष्काम सेवा करते है। तो ऊचं तें ऊच है ही भगवान। सब आत्माओं का बाप। यह भी तुम्हारी बुद्धी में खुशी होती है। बाबा कहनें सें ही एकदम खुशी का

पक्का रह जाना चाहिये। अति इन्द्रिय सुख तुम्हारी अन्तिम अवस्था का गाया हुआ है। जब परीक्षा के दिन नजदीक आते है उस समय सब साक्षात्कार होता है। अतिइन्द्रिय सुख भी नम्बरवार है बच्चों को। कोई तो बाप याद में बहुत खुश रहते है। बाप को याद करते प्रेम के आंसु आ जाते है। वाहः-बाबा जान आप से कितना सुख मिलता है। कमाल है। आप हमको दुःख से आकर छुड़ाते हो। विषय सागर से निकाल क्षीर सागर में ले जाते हो। तुमको सारा दिन यह फखुर रहना चाहिये। बाप जिस समय तुमको याद दिलाते है तो तुम कितना गदगद हो जाते हो। शिव बाबा हमको राज योग सिखा रहे है। क्योंकि शिवरात्री भी मनाई जाती है। मनुष्यों की बुद्धी में कितनी तमोप्रधानता है। शिव बाबा जो पुनर्जन्म रहित है उनका बदले पुर्नजन्म लेने वाले कृष्ण का नाम डाल दिया है। बड़ी से बड़ी यही ऐक्यूरेट भूल है। नम्बरवन गीता में ही भूल कर दी है। ड्रामा ही ऐसा बना हुआ है। बाप आकर यह भूल बताते है पतित पावन मै हूं या कृष्ण? तुमको मैने राजयोग सिखाया मैने तुमको देवता बनाया। गायन भी मेरा है नां अकाल मूर्त.... कृष्ण की यह महिमा थोड़ेई कर सक्ते है। वो तो जन्म मरण में आने वाला है। तुम बच्चों में भी नम्बरवार है जिनकी बुद्धी में यह रहता है। ज्ञान के साथ-2 चलन भी अच्छी चाहिये। माया भी कोई कम नही है। जो पहले आवेंगे वो जरूर इतने ताकत वाले होंगे। पटिधारी भिन्न-2 होते है नां हीरो हीरोइन का पार्ट भारतवासियों को ही मिला हुआ है। राज्य लेना और गंवाना। तुम सबको रावण राज्य से छुड़ाते हो श्रीमत पर। तुमको कितना बल मिलता है। माया भी बहुत जबरदस्त है। चलते-2 कितना धोखा दे देती है। बाबा प्यार का सागर है तो तुम बच्चों को भी प्यार का सागर बनना है। कब भी कड़ुवा नां बोलो। दुख किसीको देंगे तो दुखी होकर मरेंगे। यह आदतें सभी मिटानी चाहिये। गन्दी से गन्दी आदत है विषय सागर में गोते खाना। बाप भी कहते है काम महाशत्रु है। कितना बिचारियां मार खाती है। माथा मारते है। कोई-2 जो बच्ची को कह कह देंगी तुम भले पवित्र बनो। अरे:- पहले खुद तो पवित्र बनो। बच्ची दे दी खर्च आद के बोझ से और ही छूट गये। समझते है पता नही इनकी तकदीर में क्या हो। घर भी कोई सुखी मिले वा नां मिले। आजकल खर्चा भी तो बहुत लगता है। गरीब लोग तो झट दे देते है। कोई-2 को फिर मोह रहता है। आगे एक भिलनी आती थी, उनको ज्ञान में आना नहीं दिया। क्यों कि जादु का डर था। भगवान को जादुगर भी कहते है। रहम दिल भी भगवान को ही कहेंगे। रहम दिल वो जो बेरहमी से छुड़ावे। बेरहम है रावण। स्त्री पुरूष एक दो पर काम कटारी चलाते है। सबसे जास्ती बेरहमी यही है। दुनिया में किसको पता नही है। एक दो को छुरी मार खुन निकालते रहते है। नर्क के कीड़े है। बाप ने देखो कैसे-2 नाम रखे है। भ्रमरी और कीड़े का मिसाल भी बाप इसी समय बताते है। पहले-2 बाप ने समझाया है भ्रमरी का मिसाल सर्प का मिसाल। फिर बाद में भक्ति मार्ग वालों ने कापी की है। पहले-2 बाप समझाते है। पहले तो ज्ञान है नां। ज्ञान, भक्ति, फिर वैराग। ऐसे नही कि भक्ति ज्ञान फिर वैराग। ज्ञान का वैराग थोड़ेई कह सक्ते है। भक्ति का वैराग करना होता है। इसलिये ज्ञान, भक्ति, वैराग यह ठीक है। बाप तुमको बेहद का अथवा पुरानी सारी दुनिया का वैराग कराते है। सन्यासी तो सिर्फ घर बार से वैराग करते है। यह भी ड्रामा में नूंध है। मनुष्यों की बुधी में यह बैठता ही नही कि भारत 100% साल्वन्ट था। अभी भारत 100% इनसाल्वन्ट बन गया है। हिस्ट्री मस्ट रिपीट। तब कब अकाले मृत्यु नही होता था। इन सब बातों की धारणा बहुत कमलोगों को रहती है। जो अच्छी सर्विस करते है वो ही बहुत शाहुकार बनेंगे। बच्चों को तो सारा दिन भर बाबा, बाबा, बाबा, ही याद रहना चाहिये। परन्तु माया करने नही देती है। बाप कहते है सतोप्रधान बनना है तो चलते फिरते खाते पीते मुझे याद करते रहो। मै तो तुमको ऊंचे विश्व का मालिक बनाता हूं तो क्या ऐसे अपने बाप को याद नही करेंगे। बहुतों को माया के तूफान बहुत आते है। समझते है यह तो होंगे ही ड्रामा में नूंध है। स्वर्ग की स्थापना तो होनी ही है। (बाकी फिर) ओम